

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly
Magazine

Issue
17

Year
2

Volume
5

January 2014
Chandigarh

Page
24

मासिक पत्रिका
Subscription Cost
Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

जीवन जीने की कला—गीता का संदेश

प्रत्येक मनुष्य की अन्तिम अभिलाषा सुख एवं आनन्द की प्राप्ति है और व सुख तथा आनन्द भी क्षणिक नहीं होना चाहिये बल्कि स्थिर, स्थायी एवं शाशवत होना चाहिये अर्थात् आज है परन्तु कल नहीं है ऐसा सुख मनुष्य को नहीं चाहिये। इस अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए ही मनुष्य पदार्थों का संग्रह करता है, वह सदैव उन्हीं कार्यों को करता है जिससे उसे अधिक से अधिक धन एवं वस्तुयें प्राप्त हो जायें। यह सत्य है कि मनुष्य का जीवन उनके बिना चलना कठिन है। संग्रह के लिये शास्त्रों में इन्कार नहीं किया गया परन्तु वह सम्पूर्ण संग्रह न तो जीते—जी उसके लिये है और न ही मरने के पश्चात् उसके लिये है। भगवन् कृष्ण ने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुये कहा है कि—

“लोकसंग्रमेवाऽपि समपश्यन् कर्तुमर्हसि।”

तुम्हें लोक कल्याण के लिये संग्रह करना चाहिये व निष्काम भाव से कर्म करना चाहिये अर्थात् तुम्हारा संग्रह लोक कल्याण में हेतु होना चाहिये। यदि तुम्हारे कर्मों की दिशा ठीक है तो कर्म तुम्हारे लिये बन्धन का कारण नहीं बन सकते। ऋषियों के जीवन जीने की यही कला थी। वेद का ऋषि कहता है कि—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन मुञ्च्यीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्॥



इस विश्व में जो कुछ भी जड़—चेतन, चराचर है व ईश्वर का ही है। हम अपने को स्वामी न समझे। ऐसी भावना रखते हुये यदि तुम आसक्ति का त्याग करके उस परमात्मा से सतत युक्त होते हुये धर्मपूर्वक, गिदघ

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher &
Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

दृष्टि का त्याग कर विषयों का उपभोग करते हो तो तुम्हारे कार्य कभी भी तुम्हारे लिये दुःख का कारण नहीं होंगे। भगवान् का यह सनातन सन्देश ऋषियों के जीवन में साक्षात् चरितार्थ हुआ। जब मनुष्य स्वयं को अपने मूल परमात्मा से अलग मान कर अपने को धन सम्पदा का स्वामी मानने लगता है तो वह धन-सम्पत्ति होते हुये भी सदैव अभावग्रस्त रहता है और सुख और आनन्द को खो देता है। उसे यह बोध नहीं रहता कि कि इन जड़ पदार्थों में सदैव रहने वाली सुख-शान्ति नहीं है। इसीलिये पहले अपने जीवन की संचालिका, बुद्धि को ही समझाना पड़ेगा। बुद्धि को समझाने का अर्थ है बुद्धि को शुद्ध करना। बुद्धि तब शुद्ध होगी जब मनुष्य सांसारिक पदार्थों का चिन्तन छोड़कर अपनी आत्मा को निराकार व सर्वशक्तिमान परमात्मा के साथ जोड़ता है। इसलिये गीता का उपदेश है कि अपनी बुद्धि को युक्त कर लो अर्थात् परमात्मा से जोड़ लो क्योंकि बिना युक्त हुये न शान्ति मिलेगी न सुख।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।

न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ।।

जो युक्त नहीं उसके पास शुद्ध बुद्धि नहीं, जिसके पास शुद्ध अर्थात् सात्त्विक बुद्धि नहीं उसके पास भावना नहीं— वह परमात्मा के अस्तित्व को नहीं मानता, जो अपने मूल परमात्मा को नहीं मानता उसे शान्ति कहाँ से मिल सकती है? जिसे शान्ति नहीं उसे सुख भी नहीं मिल सकता, जिसे सुख नहीं वा आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकता, आगे श्रीकृष्ण कहते हैं—

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।

जो परमात्मा से युक्त नहीं वह कामनाओं से प्रेरित होने के कारण उनके फल में आसक्त हो जाता है और सदैव फलप्राप्ति का ही चिन्तन करते हुये स्वयं उसमें बंध जाता है, क्योंकि यह केवल अपने लिये ही सोचता है। इसलिये मनुष्य, योग, ज्ञान और भक्ति के द्वारा अपनी बुद्धि को परमात्मा से जोड़ दें। ऐसा करने से शान्ति, सुख और आनन्द उसे प्राप्त हो जायेंगे जो मनुष्य की सहज अभिलाषा है।

नये वर्ष में संकल्प

आईये संवेदनशील बने। हार्न का प्रयोग न करें। हमें अपने आस पास के लोगों की शांति भंग करने का कोई अधिकार नहीं है।

Let us be sensitive to the feelings of the people around us. Avoid honking. If the manufacturer of your car has provided an auto device with the gear system for honking, though not needed at all, please cooperate by getting it detached. We have no right to take away the peace and tranquility of our neighbours and the people around us. Honking comes in bad manners in all civilized countries.



Rahul Dravid Invites You To Take A Pledge Not To Honk

जीवन के लिये कुछ अनमोल बातें



हम सब का जीवन छोटा है। फर्क इतना है कि कोई चालीस तो कोई साठ साल की आयु में जा रहा है और कोई अस्सी तक जी रहा है। पर यह सच्चाई है कि हम में कोई भी किसी भी भौतिक चीज को साथ नहीं ले जायेगा। इस लिये भौतिक वस्तुओं— धन दौलत से न तो मोह करें न ही जरूरत से अधिक संग्रह।

Prudence in avoiding waste—बहुत धन होने पर भी सोचकर खर्चना कभी आप को मुश्किल में नहीं डालेगा, यही आदत अपने बच्चों में भी डाले।— Even if one is rolling in money, he should cultivate the virtue of frugality. One must budget his expenditure and think twice before buying anything new.-it is a source of constant happiness.

जहां पैसा खर्चना आवश्यक है, अवश्य खर्चें। जीवन को आनन्दमय बनाने के लिये भी पैसा खर्चें, जहां आप उचित समझते हैं वहां दान भी अवश्य दें पर सारा बचाया हुआ धन केवल बच्चों के लिये छोड़ कर न जायें। अच्छे कार्य को करने के लिये टालते न रहें। यह जीवन एक बुलबुले के समान है न जाने कोन सी घड़ी आखरी सांस हो। शुभ कार्य सोचा है तो कर डालो। अच्छा परोपकार का कार्य करने पर जो मन को प्रसन्नता मिलती है उसका कोई मुकावला नहीं।

इस बात की चिन्ता न करें कि मेरे जाने के बाद क्या होगा। जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु के बाद लाल बहादुर शास्त्री प्रधान मन्त्री बने व उनकी अक्समात मृत्यु के बाद इन्दिरा गान्धी। तीनों ने देश को अपने ढंग से सफल नेतृत्व दिया। हमारा वजूद उसी समय खत्म हो

जायेगा जब इन पंच तत्वों से बना शरीर मिटटी में मिल जायेगा। आप के माता पिता ने जो अपने प्रियों के चित्र लगाये थे, उनके जाने के बाद आपने उतार दिये। इसी तरह आपके प्रियों के चित्र आपके जाते ही, आपके बच्चे उतार देंगे।

बच्चों के बारे में अधिक न सोचें, बच्चों को अपना भाग्य खुद बनाने दें। उन्हें शिक्षा दें, अच्छे संस्कार दें, प्यार दें पर मोह न करें। अपनी जिन्दगी की जरूरतें उसे खुद पूरी करने दें। आप का मोह आपके बच्चे का सब से अधिक नुकसान कर सकता है। हो सकता है जब आप अपनी गलती को समझे तब तक समय हाथ से निकल गया हो। कार, मोटर साईकल, उच्च शिक्षा, मकान जैसा वह चाहे उसे खुद करने दें। सदैव याद रखें आपका कमाया धन आपके सुख के लिये है उसे बच्चों के सुख का साधन न बनायें। हां समय समय पर तोहफे देना एक अलग बात है। हां उनके लिये पलाट या मकान या कारें लेने में न लगे रहें। उनको जरूरत होगी तो खुद बनायेंगे।

जीवन में सब से बड़ी सुरक्षा माता पिता व परिवार के सदस्यों का प्यार है। इन सम्बन्धों को पैसे के लाम हानी से भी अधिक महत्व दें। चाहे आप कितने भी व्यस्त हैं, अपने परिवार जनों के साथ समय अवश्य बितायें। अपने अहंकार व घमण्ड को इन सम्बन्धों को न तोड़ने दें। न ही नये रिश्तों के लिये पुरानो को तोड़ें। भाई बहन आपके जीवन में पहले आये थे, बच्चे बाद में। यह सदा याद रखें।

धन कमाने या काम में इतने व्यस्त न रहें कि आपके पास अपने लिये या अपने बारे में सोचने का समय ही न रहे। हर परिस्थिती में एक घंटा अकेले में शान्ति में बैठकर अपने बारे में, अपने स्वास्थ्य के बारे में, जीवन में जो कर रहे हैं, आगे आने वाले जीवन के बारे में अवश्य सोचें। महान व सफल व्यक्तियों के जीवन को पढ़ते रहें। अगर आप कोहलू का बैल बन गये हैं तो आप में या पशु में कोई फर्क नहीं।

खुश रहने के लिये, अपने बच्चों से अधिक अपेक्षा न करें। अगर वे आपकी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरते हैं तो शायद यह भी आपके ही दिये संस्कार व आदतें

है। हो सकता है आपने उन्हे उपयुक्त समय ही नहीं दिया हो या प्यार के स्थान पर मोह किया हो। अपेक्षा स्वयं में दुख का कारण है। बच्चों के सामने जैसी बात करेंगे वैसा ही विचार उन में घर कर जायेंगे। धन, दौलत, जायदाद और अपने सम्बन्धियों के बारे में कड़कड़ाहट की बात उनके सामने न करें। जितना बड़ा आप के परिवार का दायरा होगा उतना ही जीवन में आनन्द रहेगा।

स्वास्थ्य की उपेक्षा कर धन कभी न कमायें। अगर स्वास्थ्य ठीक न होगा तो कमाये हुये धन को भी न भोग पायेंगे। 65 वर्ष की आयु के बाद अच्छा स्वास्थ्य आदमी का सबसे बड़ा मित्र है। समय समय पर जीवन का हिसाब किताब करते रहें। जब धन आपके जीवन के लिये प्रयाप्त हो तो अपने ढंग से जीवन जिये। ख्याल रहे यह जीवन इसी रूप में दुबारा नहीं मिलेगा।

अपने परिवार की तुलना दूसरे परिवार से न करें। हर परिवार की अपनी समस्याएँ, अपनी आमदनी के साधन

व जीवन के प्रति अपना नज़रिया है। हो सके तो दूसरों से खुश रहने का, अच्छा जीवन जीने का, अच्छी सेहत का राज़ मौका मिले तो अवश्य जाने।

जिन चीजों को आप बदल नहीं सकते उनके बारे में अधिक न सोचें। ऐसा करने से आप का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जो चीजें करने से आप को प्रसन्नता होती है उसे अवश्य करें। उदाहरण के लिये आपको अगर लेखन में आनन्द आता है अवश्य लिखने के लिये समय निकालें चाहे उसमें कोई भी आय न हो। जब आप खुश रहते हैं तो बिमारी कम आयेगी। अगर कोई शारिरिक या मानसिक कष्ट है वह कम दुखदायी बन जायेगा। आप को कोढ़ नहीं आयेगा, जीवन में खोखला पन महसूस नहीं होगा।

जब भी आपको कोई अपना मिलता है उसे अपने अच्छे अनुभव ही बतायें खराब अनुभव बताने की पहल न करें, अच्छा तो है बतायें ही न। ताकी खुशी फैले न की गम। आप खुशी के स्रोत बने न की गम के।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या Cash निम्न अकाउंट में जमा करवा सकते हैं।
Vedic Thoughts - Central Bank of India A/C No. 3112975979 Bhartendu Sood
IDBI Bank - 0272104000055550 Bhartendu Sood, ICICI Bank 659201411714
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

विज्ञापन

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर वधु की तलाश, प्रियजन को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए हैं न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood Printed at Amit Arts 36 MW Industrial Area, Ph-I, Chandigarh 9216504644
Owner Bhartendu Sood Place of Publication # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

सम्पादकीय

अरविन्द केजरीवाल भारतीय राजनीति में एक नया अध्याय



जो व्यक्ति यह सोचता है कि राजनीति बिना नैतिक मूल्यों के एक पाप है, यह सुन कर अवश्य खुश हुआ होगा कि आम पार्टी के नेता श्री अरविन्द केजरीवाल ने दिल्ली के मुख्य मन्त्री का पदभार सम्भाला है। 1922 में गान्धी जी ने अपने समाचार पत्र यंग इंडिया में, इन सात बातों को पाप की श्रेणी में रखा था ————— बिना सिद्धान्तों के राजनीति, बिना परिश्रम किये पैसा कमाना, बिना चरित्र के ज्ञान अर्थात् विद्वता, मानवता से दूर विज्ञान, बिना सेवा भाव के पूजा, संवेदना के बिना खुशी और नैतिकता के बिना व्यापार। भारत में आज जो राजनीति है उस में यह सभी सात बुराईयों का समावेश है। यह नैतिक मूल्यों से दूर है और समाजिक न्याय व आम व्यक्ति की सेवा भावना से विहीन है। ऐसी हालत में पिछले पच्चिस साल में अरविन्द केजरीवाल के रूप में पहली बार भारतीय राजनैतिक पटल पर ऐसा व्यक्ति उभर कर आया है जो की मूल्यों के साथ राजनीति व अपने सुखों व आरामों का त्याग कर सेवा करना चाहता है।

हो सकता है आपको आम व्यक्ति पार्टी के घोषणा पत्र ने उत्साहित नहीं किया हो क्योंकि उस में बहुत सारे ऐसे वादे भी किये गये हैं जो कि पूरे करना सम्भव नहीं

लगतें। परन्तु अरविन्द केजरीवाल ने सरकार बनाने का न्योता मिलने के बाद जो घोषणायें की हैं वह उसकी मन्शाओं को बताती हैं और जब मन्शाएँ नेक हों तो काम सफल ही होते हैं। आज भारतीय राजनीति का हाल यह है कि हर एक जनता का प्रतिनिधी मन्त्री ही बनना चाहता है अगर मन्त्री का ओहदा न हो तो वह कहता है कि मुझे कोई ऐसा पद दो जिस में बंगला, सरकारी खर्च पर लाल बत्ती वाली कार व चालक, Z सुरक्षा दायरा, सरकारी खर्च पर विदेश यात्रा की सुविधा व वह सब सुविधाएं हो जो कि पिछले समय में राजा महाराजाओं को ही नसीब थी। कई ऐसे प्रांत हैं जहां जो भी दल शासन में है उनके सभी चुने हुए प्रतिनिधियों को यह सब सुविधाएं उपलब्ध हैं। ऐसे में अरविन्द केजरीवाल ने यह कहकर कि वह मुख्य मन्त्री के बंगले में न रहकर साधारण फ्लैट में रहेंगे, उन्हें कोई सुरक्षा नहीं चाहिये क्योंकि वह ईश्वर को ही अपना रक्षक मानते हैं और उनके लिये आम जनता की सुरक्षा अधिक महत्व रखती है और वह जनता की असुविधा को ध्यान में रखते हुये लाल बत्ती वाली गाड़ी का प्रयोग नहीं करेंगे यह स्पष्ट कर दिया है कि उन्होंने राजनीति का दामन अन्याय से लड़ने के लिये व आम आदमी बनकर सेवा के लिये पकड़ा है जो की इस मंहगाई व भारी टैक्सों के बोझ में बुरी तरह पिस रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक घाटे को पूरा करने के लिये टैक्सों को बढ़ाना या नये टैक्स लगाना आम बात बन गई है। यह माना जाता है कि आम आदमी कर ही क्या सकता है। उसे नये टैक्स देने ही होंगे। मान लिया वह सरकार बदल देता है तो नई सरकार भी यही कुछ करने वाली है। कई बार आम आदमी की सहायता के नाम पर कुछ सबसिडीज कुछ गिने चुने वर्गों को दे दी जाती हैं परन्तु वह उन तक तो कम ही पहुंचती हैं, हां जो पार्टी शासन में होती है उसके राज नेताओं और अफसरों की मौज हो जाती है। यह पहली बार है कि 700 लीटर मुफ्त पानी के रूप में कोई भी राहत जन साधारण के लिये है।

आज अचरज करने वाली बात यह है कि सरकारें यह भूल चुकी हैं कि नये टैक्स लगाना ही समस्या का समाधान नहीं। खर्चों को भी कम किया जा सकता है।

प्रशासन में सादगी लाई जा सकती है। आज हमारा मिडीया भी उच्च वर्ग के लोगों की समस्याओं को ही उठाता है। शताब्दी या राजधानी में दी जाने वाले खाने की क्वालिटी तो चर्चा का विषय बनती है पर जो लाखों लोग अनारक्षित डिब्बों में पशुओं से भी खराब हालत में यात्रा करते हैं उनके बारे में सोचने वाला कोई नहीं। कोई इस बारे में आवाज उठाता है तो कहा जाता है तत्काल श्रेणी की व्यवस्था है पर क्या गरीब लोग तत्काल का खर्च उठा सकते हैं। आज पहली बार ऐसा हुआ है कि किसी राजनेता ने आम आदमी से जुड़ी समस्याओं को छुआ है। सब को इस बात का पता है कि बिजली की दर 50% नहीं की जा सकती न ही लोग उम्मीद कर रहे हैं पर अगर बेरोक बिजली की दरों को बढ़ाने पर रोक लग जाये यही बहुत बड़ी उपलब्धी होगी।

अरविन्द केजरीवाल ने भारतीय राजनीति को एक नयी दिशा दी है। हम यह उम्मीद करते हैं कि वह गददी की

शान— शोकत, अनगिनत अधिकार, उनको भ्रष्ट न करे। यह इस लिये कहना पड़ रहा है क्योंकि 1974—1977 के बीच जय प्रकाश नारायण की कांति में भी बहुत से युवक नेता पैदा किये थे जिन से जनता को बहुत उम्मीद थी पर आज वह सभी C.B.I. के लिये सब से बड़ा काम का बोझ हैं। आम व्यक्ति का भी यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने निजी कार्यों के लिये केजरीवाल को परेशान न करे। अधिकतर किसी भी नेता को भ्रष्ट करने वाले भी हम में से होते हैं।

मैं यह समझता हूँ कि अरविन्द केजरीवाल को पहले यह प्रयोग दिल्ली में सफल कर के बताना चाहिये उसके बाद ही बाकी भारत वर्ष में पंख फैलाने चाहिये। सीधे गुजरात पहुंचने का कोई मतलब नहीं। मोदी के पीछे तो सफलता के आंकड़े हैं पर अभी केजरीवाल ने जो कहा है सिद्ध कर के दिखाना है। भारत की जनता जितनी जल्दी उपर लाती है, उतने ही जल्दी नीचे की ओर भी खींच लेती है।

Devyani is no devi

It is sad that we spend so much energy and resources in India in pleading the cause of those who happen to be highly privileged at the expense of underprivileged. The ones, who should get our attention, never get because it is taken away by the likes of Devyani, thanks to our media who wants to be conspicuous at any cost. My family members go to USA very often. They never felt denigrated or humiliated. Every country has its laws and those should be respected. If USA's rules were really so repulsive then it would not have been the most cherished destination for the people all round the Globe including our Netas, Babus and techies.

Devyani is in trouble because in our country truthfulness and ethics remain glittering words only in our epics but in countries like USA these are brought in to practice as well. The one who despite being the daughter of an IAS officer got in to IFS under reserved quota can not have empathy for underprivileged. Her favourite passion looks to be staying in America and buying flats in India without being particular about the legitimacy of means. Such characters don't deserve sympathy. As you sow so shall you reap.

In my opinion, rules and laws in USA pinch our VIPs because in our country we have separate set of rules for politicians and VIPs including bureaucrats but in USA rules are same for every body. For example, every body pays respect to queue culture. When it comes to public conduct we have nothing to feel proud of, globally known, but we want every one in the

world to become like us and to accomplish it our leaders are always in the fore front. Just look at our diplomat's character, she lied for a flat in India and we are not ashamed as a nation. Entire world has seen how our diplomat

defrauded and we came to roads in her defence. This is one such example how our reputation in the eyes of global community takes a hit with every passing day. It is a high time we come out of this habit of self aggratation and do introspection.

It is also shocking that IAS/AFS associations have jumped to her defence. I feel that this apex body which represents the cream of the Indian service class should be able to differentiate between the wrong and the right otherwise there is no difference between workers union and IAS association.

Today our children are taking out protest marches in every corner of the country. Ask Devyani if she would spare a thought seeing any girl being subjected to a worse humiliation, not rare in India.

I fully laud the role of USA authorities. If you don't like then avoid USA as you avoid likes of Somalia.



Editorial 2

Prayer is A Matter of Cosmic Connectivity and not Language

Can any language be termed as the divine language? Or can we accept that communion with God is possible only in some particular language as the general impression is sought to be created in our country with regard to Sanskrit language. We'll do well to appreciate that Sanskrit is a language like any other language though, according to Indian belief, the oldest language. Since, in good old days when our Vedas and other Holy Scriptures came in to existence Sanskrit was the language of communication, it was quite natural that these religious texts and scriptures were written in Sanskrit. When we say that Vedas are 'shrutis' i.e. it conveys that God imparted knowledge to the learned sages who practiced austerities and were considered to be the most enlightened and suitable by God for receiving the most valuable treasure of knowledge. Now, it was natural that these sages write their feelings so erupted during the course of communion with God in the language they knew. If those sages knew any other language they would have penned the feelings in that language.

Therefore, to say that Sanskrit is a divine language, perhaps, is not correct and is more a matter of faith. Any doctrine or philosophy has no language. Language is only a means to express it and it holds good for religious doctrines as well. Therefore, when any person links his religious doctrine with any particular language, it is more a reflection of his love for the language than his reverence for the philosophy. But, while doing so he does great injustice to the philosophy simply because when he links any philosophy with a particular language he confines it to certain boundaries. Every language and dialect has certain boundaries. That is exactly what happened with our Hindu and Vedic philosophies.

Again the predominant role of a language in religion leads to many undeserving people assuming the role of priests and gurus. In many parts of our country, ability to read and good command over Sanskrit language is seen as a prerequisite to be recognized as a religious guru. Not only this all rituals are performed in Sanskrit language irrespective of whether the persons for whom the ritual was performed understood what the priest would chant in the form of shalokas or hymns. In the marriage ceremony if the boy and girl do not understand what seven vows they are taking, the ceremony has little use for them. Mahatma Phule, a great religious reformer of nineteenth century, was hundred percent right when he advocated for the performing of rituals in the local language and without any priest etc.

To say or accept this notion that when the priest chants shalokas or hymns in Sanskrit, the message reaches the *devas* or God is nothing but a superstitious belief which fails to withstand sound reasoning. I don't think, unless the person for



In the marriage ceremony if the boy and girl do not understand what seven vows they are taking, the ceremony has little use for them. Mahatma Phule, a great religious reformer of nineteenth century, was hundred percent right when he advocated for the performing of rituals in the local language and without any priest etc.

whom ritual is performed, really understand what the prayer is, it can bring the desired reward to him. For example the simple meaning of Gaytri mantra which has a very high place for majority of Hindus is-'O omnipotent God, giver of life! Only your kind grace can remove our sorrows and pain. Please enlighten our intellect so that we follow the right path. May we not distract from the right path.' There are two situations. First is to recite it without knowing its meaning. I don't think it can have desired impact on the supplicant. Second is to speak the meaning in the language one knows. It will not only have the desired impact but would create connectivity with God to whom prayer is made.

The hymns in our Vedas speak of good of all men, creatures and everything on this planet without any regard to origin, race, religion, language and sex.

But by linking it to a particular language, we confined it to certain boundaries and the people of other religions started looking at Vedas as the holy scriptures of Hindus only where as these carried message for entire humanity.

We will do well to allow Vedas to be evolved for the benefit of entire humanity but it is possible when we don't link it with any particular language. Again, today when Sanskrit is no more the language of parlance, linking Vedas with Sanskrit has proved to be highly regressive. Thus, prayer is a matter of one's feelings and mind and not of language and body postures.

ज्ञान व धन का सम्बन्ध

ऊर्वशी गोयल



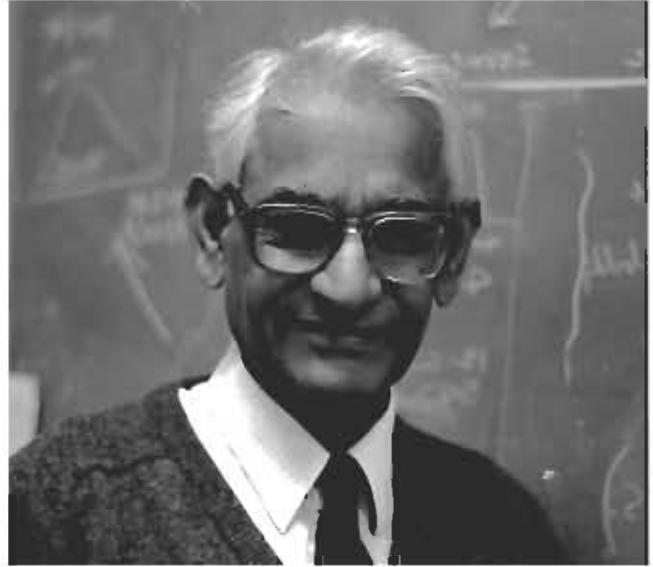
धनवान का सम्मान केवल अपने गांव या शहर तक सीमित है। राजा का सम्मान केवल उसके राज्य तक सीमित है। विद्वान का सम्मान हर स्थान पर हर समय होता है

The fool is worshipped only in the house.
The rich man is respected in his own village,
The king is honoured only in his own kingdom,
But the wise man is worshipped, respected and
Honoured in all places, at all times, under all conditions

बात पुराने समय की है। दो भाई अपने अपने जीवन का रास्ता खोजने के लिये घर से निकल गये। एक भाई शिक्षा प्राप्ति के लिये गुरुकुल में दाखिल हो गया और दूसरा भाई एक हीरे जवाहारात के व्यापारी के पास नोकरी में लग गया। कुछ समय बाद दोनों ने अपने घर जाने की सोची और जो कमाया था अपने साथ ले कर घर के लिये चल पड़े।

रास्ते में उन पर डाकूओं ने हमला कर दिया। जो भाई हीरे जवाहारात के व्यापारी के पास काम करता था उसके पास कमाया हुआ काफी धन था। डाकूओं ने सब छीन लिया। दूसरे भाई ने तो गुरुकुल में रह कर केवल ज्ञान प्राप्त किया था जिसे डाकू ले नहीं सकते थे। एक भाई खाली हाथ, सभी कमाया हुआ धन खो कर, हताश और दुखी घर पहुंचा और दूसरे के पास सब कमाई दौलत वैसे की सुरक्षित थी।

हम सभी को जीवन यापन करने के लिये धन की आवश्यकता होती है। धन के बिना सब काम रुक जाते हैं। चाणक्य के अनुसार धन की विपदा व्यक्ति को धीनोने से धीनोना पाप करने पर मजबूर कर देती है, धन का न होना भी अभिषाप है। धन व्यक्ति को न केवल सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि ठीक ढंग से कमाया हुआ धन समाज में समान प्रदान करता है। वेद में कहा है—अग्निना रयिमश्नवत पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीरवत्वमम। ऐ मानव ! तू खूब धन कमा, परन्तु तेरा धन आत्मा और शरीर की पुष्टि करने वाला, उत्तम कीर्ति को बढ़ाने वाला व ऐसा धन हो, जिसे विद्वान व शूरवीर भी



श्री हरगोबिन्द खुराना

अमेरीका में काम करते हुए नोबल पुरस्कार पाया।
विद्वान का सम्मान हर स्थान पर हर समय होता है

चाहते हैं।

आगे वेद कहता है—हमें धर्मानुसार प्राप्त किये धन से जीवन निर्वाह करना चाहिये। अर्थात् जीवन में धन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

परन्तु धन को कमाने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान प्राप्ति का साधन है शिक्षा, जो कि हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाये व हमारे चरित्र का निर्माण भी करे। जो व्यक्ति यह सोचते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल मात्र जीवन यापन करने के लिये धन कमाना है वह शिक्षा के स्तर को बहुत नीचा ला रहें हैं। ज्ञान धन कमाने की चाबी नहीं परन्तु उस से कहीं उंचा है। हम ज्ञान से धन तो कमा सकते हैं पर धन द्वारा ज्ञान नहीं खरीद सकते। ज्ञान तो स्वाध्याय के तप द्वारा ही आता है। जब की संसार की सारी सम्पदा की तो कोई सीमा है पर ज्ञान की कोई नहीं। धन का खजाना धन के मालिक को धन की सुरक्षा के लिये चिंतित कर सकता है पर जिस के पास ज्ञान का खजाना है उसे उसकी सुरक्षा की कोई चिंता नहीं होती। ज्ञान रूपी धन को न कोई चुरा सकता है न ही कोई लुटेरा लूट सकता है। धन के बारे में एक ख्याम

बात यह है कि धन को जब हम बांटते हैं या खर्च करते हैं तो यह कम होता है जब की ज्ञान बांटने से और बढ़ता है। ज्ञान का दान देना, धन देने से कहीं अच्छा है। कहते हैं कि भूखे व्यक्ति को रोटी तो दें पर उस से भी जरूरी है कि उसे इस योग्य बनायें कि वह अपनी रोटी खुद कमा सके। बाबा आमटे जिन्होंने अपना सारा जीवन कोढ़ पीड़ितों को नया जीवन देने में लगा दिया था, न केवल कोढ़ पीड़ितों का ईलाज करते थे पर जब वे स्वस्थ हो जाते तो उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के लिये उनकी योग्यता के अनुसार कोई हुनर सिखाते थे ताकी उन्हें अपना जीवन यापन करने के लिये भीख न मांगनी पड़े।

यह सत्य है——घनवान का सम्मान केवल अपने गांव या शहर तक सीमित है। राजा का सम्मान केवल अपने राज्य तक सीमित है। विद्वान का सम्मान हर स्थान पर हर समय होता है

मुंडका उपनिषद में कहा है कि ज्ञान दो तरह का है। एक ज्ञान वह है जिस में हमने वेद उपनिषद पढ़ लिये और उन में कही बातों को दीमाग में संग्रह कर लिया। यह ज्ञान इतना उंचा नहीं। दूसरा ज्ञान वह है जिस द्वारा हम सृष्टि के रचइता ईश्वर को समझते हैं और उस तक पहुंचते हैं। यह ज्ञान उच्चतम श्रेणी का है। उपनिषद कहता है,——— उस ईश्वर को जानो उस को जानने के बाद बाकी सब का ज्ञान आप को स्वभाविक रूप से हो जायेगा। यह संसारिक ज्ञान मृत्यु के साथ समाप्त हो जायेगा जब की दुसरा ज्ञान आपको ईश्वर तक ले जायेगा। श्री कृष्ण गीता में कहते हैं——ईश्वर की उपासना द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रकाश मृत्यु के बाद भी नष्ट नहीं होता।

जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करने का इच्छुक हो उसे धन व संसार की चीजों को एक साधन तक ही सीमित रखना होगा और इनके संग्रह से बचना होगा यही है ज्ञान व धन का उचित सम्बन्ध।

FEED BACK

My sincere compliments to **Sh. Ashok ji** on his article '**Vridh Vyatha**' which is an in depth peep by him into the plight of our old lot. Instead, our young generation should respect them and benefit from thier rich experience. They are competent to provide ready made solutions to the today's stressed younger lot. All they need is little time from their children whom they have reared with lot of pain and hardships.

H.D. Kohli Chandigarh

The article by Priyambica was really a very good one. To write such wisely at such a young age is certainly commendable. Convey our best wishes to the little one. Both of you must be very proud of her.

Bharat Patel, CANADA

आपकी पत्रिका Vedic Thoughts वास्तव में अनुपम पत्रिका है, जो जनता के सभी वर्गों के पास पहुंचनी चाहिये। वैसे तो आर्य जगत की कई पत्रिकायें हैं पर ऐसी कोई नहीं जो जनता के सभी वर्गों को वेदों का संदेश देती हों। दूसरी पत्रिकाओं को कम लोग ही पढ़ते हैं। मेरी आपको राय है कि आप अपनी पत्रिका के लिये सहायता कोष स्थापित करें ताकी वह अधिक संख्या में छपे और वार्षिक चन्दा भी कम हो सके।

अश्विनी कुमार पाठक दिल्ली 011 – 2687163 6

मुझे ऐसा लगता है कि आज के समय में हर रिश्ता बस नाम का रह गया है। इसके पीछे माया का प्रभाव है। आज व्यक्ति का मूल्यांकन उसके चरित्र से नहीं बलिक पैसे से होने लगा है। सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि मानव संवेदनशील बने व दूसरों की भावनाओं की भी कदर करे। यही हमारा नव वर्ष पर संकल्प होना चाहिये।

अन्जु चौधरी

Austerity in public life

Neela Sood



Austerity in public life is a virtue to be admired and it becomes of the higher order if the doer practices it with the spirit of self denial. It is a Yoga in its true sense as it involves putting restraint on privileges and entitlements to which one is entitled to, by virtue of his position. It is also a reflection of his deep concern for the people whom he rules. It is for this reason that Arvind

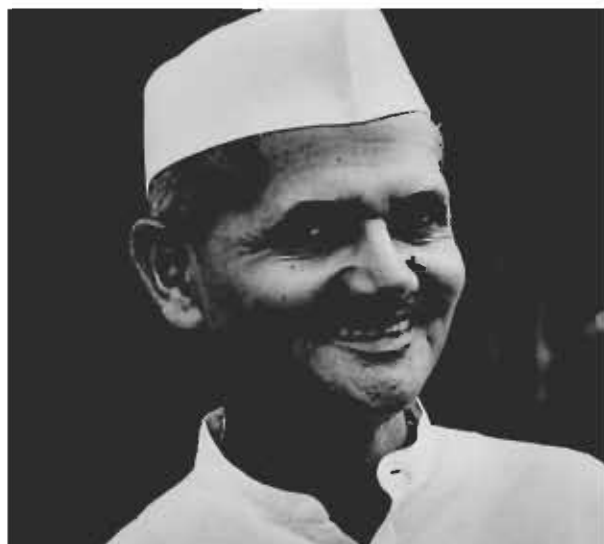
Kejriwal's dizzying ascent to power in Delhi as CM, has been welcomed whole heartedly by vast majority of our middle class.

Its positive impact on the masses can be gauged from the fact that more than the AAP's manifesto, which includes many freebies, it is the announcements made by Kejriwal after staking claim to form a government in Delhi that excited every body. His voluntary declarations that he will not live in CM's bungalow and would settle for a flat, would not use Z security as he believed that God is the biggest protector and would shun beacon lights on the vehicles to save his own people from the harassment have warmed the hearts of people no end. By embracing such austerities, he has reviving the rich old values and political culture, to which the leaders of this great nation were wedded at one time. Chanakya, one of the greatest thinkers the country has produced and whose Arthashastra or treatise on statecraft is known to be full of worldly wisdom, was staying in a simple hut 6 KM away from city limits after becoming the Prime Minister in Chandragupta's kingdom, because he believed that with power came responsibility.

Who can forget that Mahatma Gandhi, the father of the nation, went to meet the English premier Churchill with a loin cloth and a simple sheet wrapped around his torso. When one of the reporters said, "Don't you feel embarrassed to be before the Premier of England in this dress" Mahatma's reply was, "I am wearing what the majority population of my country, whom I represent here, can afford."

Lal Bahadur Shastri, our ex Prime Minister had only Rs 1974 in his bank balance, when he died. Despite being the Prime Minister of the largest democracy and a cabinet Minister in the Indian government for a long period, he had no house of his own. He made his sons to compete with other commoners for ordinary jobs so much so that once one of his sons was spotted in a queue for an interview for a job in a private company.

Great freedom fighter Sucheta Kriplani adorned the offices of the Cabinet Minister in the centre and also served as the Chief Minister of the largest Indian state UP but she breathed her last in a rented room and would do all her household chores till she was alive. It is worth remembering here that her husband



Even the Goa Chief Minister Manohar Parrikar has not taken any security. He does not use red light on his vehicle and very often goes to his office driving his own scooter. His wife goes to market on rickshaw.

Acharya Kriplani was also a highly reputed public figure besides being a staunch Gandhian. Sardar Patel, the iron man of India, had neither a house nor a car. His last bank balance was Rs1395. Our first President Dr. Rajinder Prasad who remained President for two terms, when died, had only Rs 324 in his bank account with PNB Patna Branch. Some time back when the bank celebrated its hundredth year, Babu Rajinder Prasad's account was displayed by it as the most valued account of the bank.

Not to forget Mr. Manik Sarkar, who has been the Chief Minister of Tripura for the last more than 20 years. It is said that the bank balance of this man decreased in his tenure as Chief Minister. Son of a tailor, Manik Sarkar does not possess any moveable or immovable property. An ancestral house in the village was transferred in his name after the death of his mother; which he gave to his sister. He does not have car, and even a cell phone. Manik Sarkar does not use even red beacon (light) on his official car. His morning starts with washing his clothes. He donates his whole salary to his CPI (M) party, and gets Rs 5,000- as subsistence allowance. Austerity in public life is respected can be gauged from the fact that Mr. Manik Sarkar commands unflinching support and respect of 93 per cent of Tripura voters. The people of the state have reposed full faith in his leadership with three-fourth majority.

The point is that the Leaders who remain upright, practice austerity in public life and join politics with a mission to serve the people are always admired irrespective of their political affiliation.

मुस्कराहट



बिना जल मीन नहीं, बरसे बिना मेघ नहीं, तीर बिना तर्कष नहीं, बिना बत्ती दीप नहीं,
बिना मोती सीप नहीं, माली बिना बाग नहीं, सुर बिना संगीत नहीं, मुस्कराहट बिना मनुष्य नहीं।

क्योंकि मुस्कराहट से मुराद का भण्डार बने, मानवता का आधार बने, राम रहीम से प्यार करे, मझधार में मार्ग मिले, दुर्लभ रणवीर बने,

मजबूरी हो, जरूरी हो, या जी हजूरी हो, हर मुस्कान में मकसद होता है, दिल से दी मुस्कान, जख्मों की मरहम होती है, किसी की झलक से आई मुस्कराहट आकर्षण होती है। मुस्कान बिना शिंगार फीका, सौन्दर्य लगे अमावस, स्वर्ण खोटा, दंगल तने, मंगल टले।

मुख पर मुस्कान पुलकित करना एक प्रेम, शांति, प्रयास, शत्रुता विनाशता, संबंध संगठिता और श्रैष्ट मित्र पद्धति का संकेत है। बिना मुस्कराहट मनुष्य अपूर्ण है। इससे व्यवहार, मानसिकता, सामर्थ्य सकारमकता का पता चलता है। जब मस्तिष्क मुख पर मुस्कराहट का आगमन होता है तो रिमझिम बरसात की फुहार, शीतल पवन का अहसास होता है, किसी की मुस्कान उसके गौरव, प्रतिभा और गुरुत्वा की सांकेतिक होती है। मुस्कराहट वास्तव में है क्या? यह एक सफलता, हर्षता, आश्चर्य का संगम है, मुस्कराहट श्रैष्टता, शिष्टाचार सहानुभूति की त्रिवेणी है। जिससे मुख मण्डल खिले हुए पुष्प सम्मान लगता है। यह मुस्कराहट व्यक्तित्व का आभूषण है, गुणवत्ता का रुद्र है, अध्यात, धैर्य, वैदिकता का अंश है। शरीर को सजाने की किया है, व्यक्तित्व का व्याकरण है। यह एक वो कमल है जो कीचड़ में रहकर भी आकर्षित करता है, अपने भाग्य पर सदा प्रसन्न नजर आता है। मुस्कराहट वह किया है जिससे बड़-बड़े क्रोधा-योद्धा भी पराजित पड़ जाते हैं, एक पल सोचने पर मजबूर हो जाते हैं। मुस्कराहट एक मंत्र है, संगीत है, जिससे मुगधता छा जाती है। किसी ने सत्य कहा है कि उसकी मुस्कान ने मेरे होश उड़ा दिये, किसी ओर ने भी कहा है, “तेरा मुस्कराना गजब हो गया”, “तुम जो इतना मुस्करा रहे हो, क्या गम है जो तुम झुपा रहे हो” हो कभी ये शायरी लगे, कभी नगमा बने, कभी नरगस दिखे, या कविता बने, विष बनें कब, या डसे, गायत्री बनें या फिर गिरगिट। मुस्कराहट से कभी प्रेम रोग लगे कभी राग बने। मुस्कराहट एक यंत्र है, एक विजय प्राप्ति कवच है, जो नियंत्रिता स्थापित करती है, एक तंत्र है जो आधुनिक युग, शासन प्रणाली का एक शक्तिशाली स्तंभ है। अन्त में एक षडयंत्र, रहस्यमयी मुस्कान भी हो सकती है। मुस्कराहट - मुस्कान भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है जैसे- मंद मुस्कान, ठहाकेदार मुस्कान, कृतमिक या व्यंग्यात्मक मुस्कान, विस्फोटक मुस्कान, अतः छल, कपट, कल्याण, दयाभरी मुस्कान आदि।



मुस्कराहट की अगर विशेषताएँ, विश्लेषण, विवेचना और आलोचनात्मक अध्ययन करें तो हर एक मुस्कराहट का अपना रंग, आकार, रूप, लक्षण, रहस्य और उद्देश्य होता है। मुस्कराहट की प्रतिक्रिया तेजाबी, प्रभावित और प्रहारिक - परिणामरूपी हो सकती है। मुस्कान कभी भी स्थाई नहीं होती। मुस्कराहट का जीवन समुन्द्र की लहरों सम्मान होता है। कभी मुस्कराहट उत्पात करवाये, कभी विपत्ति बने। मुस्कराहट में उच्चारण नहीं होता, एक मूक भाषा शब्दावली का प्रदर्शन होता है और मुस्कराहट संकेत से ही हृदय और मस्तिष्क का तालमेल होता है।

धन्य हैं, वो लोग, जिन्होंने मुस्कराहटों को नीजि संपत्ति न बना कर जन साधारण को समर्पित किया। यह एक ऐसी पूंजी है जिसका बिना जोखिम, कीमत वितरण किया जा सकता है इससे शिकवों और शिकायतों का संहार होता है, माहौल परिवर्तन होता है, दुष्टता लुप्त होती है। मुस्कराहट से होंसला, हर्षता, हृदयता, हमदर्दी की वृद्धि होती है और मनुष्य सूरजमुखी पुष्प समान खिलता है। आजकल तनावयुग है। हर कोई किसी न किसी तनाव में ग्रस्त है और मुस्कराहटों का लोगों के चेहरों से वाष्पीकरण हो गया है। मुस्कराहट आती ही नहीं, आधुनिकता के आगे मुस्कान टिकती ही नहीं। लोगों के पास समय का अभाव है, हर कोई तेजी में है, हाँ कभी कभी कुछ लोगों के चेहरों पर बात शुरू करने से पहले ही मुस्कान दस्तक दे देती है या कभी ऐकांत में बैठे किसी पुस्तक की पढ़ी हुई घटना, या अतीत की किसी घटना का स्मरण होने से भी मुस्कराहट की उत्पत्ति होती है। कभी मुस्कान पहेलियाँ होती हैं। उनकी इबारत पढ़ना कठिन होता है। कभी अजनबियों से मिलती है। एक संबंध निर्माण का प्रमाण बन जाती है, कभी दुख बांटने के लिए सहायक होती है, या फिर मुस्कराहटें इंसानियत बन जाती हैं। मुस्कराहटें किसी वर्ण, मजहब की विरासत नहीं होती, बल्कि विश्वास जीतने का आधार है। प्रत्येक धर्म का उपदेश भी है कि मानवता के लिए मुस्कराहट आवश्यक और समृद्धिशील होती है। कुछ लोगों ने शायद मुस्कराहट का मखोटा पहन रखा होता है। जिसके पीछे छल, षडयंत्र, अहंकार, का दानव होता है। कुछ मुस्कराहटें मकड़ी जाल होती हैं, जिससे किसी की सादगी, मजबूरी, का अवैध लाभ

अतः उत्पीड़न, शोषण कारक होती हैं। कभी मुस्कराहटें पेचीदगी बनें, कभी किसी के गले का हार, कभी बने भगवान-दयावान, कभी बनें इल्जाम, कभी बने माथे की बिंदिया, कभी बने सिंदूर और कभी बनें किसी के लिए दुनाली। या बने योग प्रणाली। कभी ऐसी मुस्कान आती है जिससे कजरा घुल जाता है, राज खुल जाते हैं। मुस्कराहट एक वह रंग है जैसे चित्रकार अधूरे चित्र में रंग डाल देता है। मुस्कराहट ही मुस्कराहट की जननी होती है। मुस्कराहट वाले खुशियाँ उधार नहीं लेते वह तो कठोरता को मोम करते हैं।

कभी मुस्कराहट बने आशीर्वाद, “मुस्कराते रहो!” शायद फिर बन जाती है जीवन दायिनी। खुशी सुनकर साहस का सेतु बांधती है। साकी को देख आई मुस्कान, प्यास मिटाने का सबब होती है। कभी संजीवनी बनें मुदों के लिए, नफरतें मिटाए मजहबों की, महोब्सत बन कर। गरीमा बने मुस्कान माता की, उपहार होती है मुस्कान बन्धुओं की। गौरव बने मुस्कान गुरुओं की। महफिल बनें मुस्कान मित्रों की। मदिरा बने मुस्कान साकी की। अचम्बा बनी मुस्कान अजनबी की, कभी अफसाना, कभी शबनम बनी, कभी शैतान हुई मुस्कान। फिर अजब हुए परिणाम, कभी पीड़ बने पड़ौसी की, कभी गीत, कभी रीत, कभी प्रतीत हुई मुस्कान।

प्रश्न उठता है अगर हंसी, मुस्कान मुस्कराहट गुणकारी है तो इसकी उत्पत्ति, निर्माण कैसे होता है और प्रकट कैसे किया जाये। इसके लिए सोच बदलनी होगी। अहंकार, ईर्ष्या, शत्रुता के आवरण को हटाना होगा, अज्ञानता के अंधकार को मिटाना होगा, प्रकृतिकता को स्वीकारना होगा, खुशियाँ, प्रेम, श्रेष्ठता का मंत्र पढ़ना होगा। वैध, वेदान्त, प्रवचन सुनना होगा। काव्य वाणी का अनुसरण करना होगा। सदैव अच्छाई की परछाई बनना होगा। तनाव तपश से बचना होगा।

वह पथिक, मजदूर कितना भाग्यशाली है जो दिनभर थक कर रात्रि को ढोलक की ध्वनि में अपना स्वर देकर आनन्द मानते हैं और गीत

गाते हैं, एक-दूसरे को मुस्कराहट से देखते हैं। आस-पड़ोस में सुनने वाला भी मोहित होता है। दूर सड़क पर जाने वाले राही भी सोचता है, मन में मुस्कराता है, वातावरण मंगलमय हो जाता है, शायद एक सबक सीखता है। ऐसे ही मुस्कराहट के कुछ ओर पल हैं जैसे प्रभात में नाविक दूर समुन्द्र के शांत वातावरण, पक्षियों के मधुर स्वर के साथ ऊँचे स्वर में गाता है चेहरे पर मुस्कान नृत्य करती है, कभी-कभी किसान और माली भी अपने खेतों, बागों में अपनी खुशी का इजहार गीत गा कर करते हैं। अगर मनुष्य हंसता नहीं, मुस्कराता नहीं तो उसका जीवन बिना मोती वाली सीप के समान है, मारुथल में लगी एक झाड़ी के समान है या फिर परेशानी की धरा पर खड़ा है। तनाव की चक्की में पिस रहा है, कारण है मेरा-तेरा, पदार्थवादिता, स्वार्थवादिता। जब तक यह चुनरिया का त्याग नहीं होता, मुस्कराहटों का वाष्पीकरण होता रहेगा। मनुष्य शायद इसी लिए मुस्कराना भूल गया। तभी तो मुस्कराने के लिए कृत्रिम प्रणालियों का सहारा लिया जाता है क्योंकि आज नैतिकता, सांस्कृतिक लुप्त हो गई है जो कि मुस्कराहटों के लिए मूल आधार है। अगर मनुष्य छल-कपट की सीढ़ी चढ़ेगा तो मुस्कराना असम्भव है, मनुष्य स्वयं ही अपना जीवन शमाशान करेगा। एक समय आयेगा जब डॉक्टर कहेगा कि दिन में तीन बार भोजन से पहले हँसना होगा और दिन में पाँच आदमियों को हँसना होगा, तभी रोगों से निवारण होगा और श्रेष्ठ स्वस्थ निर्माण होगा। अन्त में मुस्कराहटों के प्रसार को जीवन का आदर्श बनाओ। छोटी-छोटी मुस्कानों से आहुति देकर जीवन के दीप जलाओ जो मानवता के लिए एक विशाल, शक्तिशाली जीवनशैली बनें।

अशोक कुमार, उप-आबकारी और कर कमीशनर, सेवानिवृत्त, पंजाब।
मो. 98789-22336 दिनांक: 23.12.2013

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरुकुल, कांगड़ी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ
Wholesaler & Retailer of :

HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृपया निम्न address पर सम्पर्क करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर— 45-A, चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

A Family That Eats Together

Saguna Jain

"I talk and talk and talk but have not taught people in fifty years what my father taught me over a few meals at the dining table." – Mario Cuomo

BUSY is a big word that kids learn these days even while they are small. Running around is what they see their parents do and learn to do the same very early in life. Multi-tasking is the trick to survive, they understand quickly enough. We live in complex times. Everybody wants to do everything. Being left behind is not an option. Time is a valuable commodity that one is always short on – parents and children alike. We are not realising that in order to pursue and achieve our larger than life dreams and aspirations, we are losing out on our all important present. In order to impress the world we are losing out on spending moments with our own. In order to keep up with the Jones's we are losing touch with ourselves.

In present times, how often do we get a chance to sit down with the family and enjoy a meal. With home-work, tuitions, sports, music lessons, computer time, TV hour, video games, work schedules beckoning all the time, the biggest casualty is the family time. Rounding up everybody for meals was not such an arduous task not too long ago. Eating together was not a luxury, it was a natural phenomenon. Sitting for hours on the dining table, even after the meal was long over, was not an event, it was an everyday happening. Not anymore.

We read and hear with all attention and interest about what is good to eat for us. But, how to eat is relegated to the background though. Any psychologist will tell us that eating together has great benefits. Not only for us, our children and our family, but also for the entire society. For our well-groomed teenagers today will constitute the good citizens of tomorrow.

Conversations during meals are a perfect platform for the families to interact. We bond, plan, connect, laugh and learn loads from each other. Dinner times are great occasions to share news of the entire day. The extra attention that we give to each other translates into a unifying experience. It envelops our children in a blanket of warmth, love, security and an overall feeling of belonging. This is what they will remember and carry with them all their lives. This is what will keep them a few notches above the rest – always.

Most of us did not need to go to finishing schools to learn appropriate table manners, meal etiquettes and social skills. We learnt them all in the confines of our homes and during those occasional meals in the restaurants with our parents and friends. The parents who know lead by example, seldom criticizing or instructing. Well aware that it is important to



keep the mood at mealtimes happy and relaxed. If it isn't, well then it will probably be better to not eat together at all. The dining table is not a firing range. Don't treat it like one. Keep the complaints and misgivings for later – much later.

It is unfortunately becoming increasingly fashionable these days to eat in front of the television. A lot of families make an effort to install a television set in the dining room as well. If one were sitting with all pairs of eyes on what's on the screen, without exchanging a single word, it actually amounts to eating alone. The TV is not called an idiot box for nothing. It is the medium that gives us the wrong notion of being alone even when we are actually surrounded by people. A study has actually revealed that we are more alert and alive mentally while we are asleep than we are when watching TV. A fact that most of us know and realize yet fall prey to the charms of the box settled proudly in almost all the rooms of our homes today.

Eating is an experience. Every new food introduced on the table increases our horizons. Each cuisine takes us to a different part of the world. Discussions about the said item expands the knowledge, experience and skill of the elders and the youngsters alike. Involving the kids in the cooking as well would be like the cherry on the cake. Let them cook and watch them eat the foods that they had never touched. This is perhaps the best way to introduce them to the new foods without the forcing, coercing and bribing usually attached with the kids relationship with nourishing foods.

It doesn't take much. A little time, some imagination, dash of restraint and ability to hear make perfect ingredients to plate a beautiful dish. A dish that will spread love, cheer and happiness. That will make your home a better place to live in and your children a happy lot. It is worth making that effort for after all happy children are the prettiest children going around.

ग़लत होने पर भी जो साथ दे वह मित्र नहीं घोर शत्रु है

सीताराम गुप्ता



पाश्चात्य पर्वो अथवा आयोजनों की कड़ी में एक पर्व अथवा आयोजन है फ्रेंडशिप डे। क्यों मनाया जाता है फ्रेंडशिप डे? फ्रेंडशिप क्या है? क्या फ्रेंडशिप—बैंड बाँधने मात्र से फ्रेंडशिप अथवा मित्रता का निर्वाह संभव है? क्या एक साथ बैठकर खा—पी लेने अथवा मटरगश्ती कर लेने का नाम ही फ्रेंडशिप है? क्या फ्रेंडशिप सेलिब्रेट करने की चीज़ है? फ्रेंडशिप अथवा मित्रता का जो रूप आज दिखलाई पड़ रहा है वास्तविक मित्रता उससे भिन्न चीज़ है। फ्रेंडशिप अथवा मित्रता सेलिब्रेट करने की नहीं निमाने की चीज़ है। फ्रेंडशिप अथवा मित्रता एक धर्म है और धर्म का पालन किया जाता है प्रदर्शन नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं :

धीरज, धरम, मित्र अरु नारी, आपत काल परखिएहु चारि।

धैर्य, धर्म और नारी अर्थात् पत्नी के साथ—साथ मित्र की परीक्षा भी आपत काल अथवा विशम परिस्थितियों में ही होती है। ठीक भी है जो संकट के समय काम आए वही सच्चा मित्र। पुरानी मित्रता है लेकिन संकट के समय मुँह फेर लिया तो कैसी मित्रता? ऐसे स्वार्थी मित्रों से राम बचाए। यहाँ तक तो कुछ ठीक है लेकिन आपत काल अथवा विशम परिस्थितियों की सही समीक्षा भी ज़रूरी है।

हमारे सभी प्रकार के साहित्य और धर्मग्रंथों में मित्रता पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। सच्चे मित्र के लक्षण बताने के साथ—साथ मित्र के कर्तव्यों का भी वर्णन किया गया है। रामायण, महाभारत से लेकर रामचरितमानस व अन्य आधुनिक ग्रंथों में सभी जगह मित्रता के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। उर्दू शायरी में तो दोस्ती ही नहीं दुश्मनी पर भी खूब लिखा गया है और दुश्मनी पर लिखने के बहाने दोस्ती के नाम पर धोखाधड़ी करने वालों की जमकर ख़बर ली गई है। मिर्जा 'ग़ालिब' एक बेहद दोस्तपरस्त इंसान थे पर हालात से बेज़ार होकर ही वो ये लिखने पर मजबूर हुए होंगे :

यह फ़ितना आदमी की ख़ानावीरानी को क्या कम है,
हुए तुम दोस्त जिसके दुश्मन उसका आसमाँ क्यों हो।

—
एक पुस्तक में एक बॉक्स में मोटे—मोटे शब्दों में मित्र विशयक एक विचार छपा देखा, "सच्चे आदमी का तो



दुर्योधन जैसा दुष्ट व्यक्ति कर्ण जैसे अच्छे व्यक्ति को भी अधर्म के मार्ग में डाल देता है।
दुर्योधन को कर्ण का मित्र ना मानकर
एक शत्रु ही मानना चाहिए।

सभी साथ देते हैं। मित्र वह है जो ग़लत होने पर भी साथ दे।" क्या यहाँ पर मित्र से कुछ अधिक अपेक्षा नहीं की जा रही है? मेरे विचार से अधिक ही नहीं ग़लत अपेक्षा की जा रही है। ग़लत होने पर साथ दे वह कैसा मित्र? ग़लती होने पर उसे दूर करवाना और दोबारा ग़लती न हो इस प्रकार का प्रयत्न करना तो ठीक है पर किसी के भी ग़लत होने पर उसका साथ देना किसी भी तरह से उचित नहीं ठहराया जा सकता। हम दोस्ती में ग़लत फ़ेवर की अपेक्षा करते हैं। कई बार दोस्ती की ही जाती है किसी ख़ास उद्देश्य के लिए। ऐसी दोस्ती दोस्ती नहीं व्यापार है।

धिनौना समझौता है। स्वार्थपरता है। कुछ भी है पर दोस्ती नहीं। इस्माईल मेरठी फ़र्माते हैं :

दोस्ती और किसी ग़ुरज के लिए,
वो तिजारत है दोस्ती ही नहीं।

ऐसा नहीं है कि अच्छे मित्रों का अस्तित्व ही नहीं है लेकिन समाज में मित्रता के नाम पर ज़्यादातर समान विचारधारा वाले लोगों का आपसी गठबंधन ही अधिक दिखलाई पड़ता है। अब ये समान विचारधारा वाले लोग अच्छे भी हो सकते हैं और बुरे भी। अब यदि ये समान विचारधारा वाले लोग अच्छे हैं तो उनकी मित्रता से समाज को लाभ ही होगा हानि नहीं लेकिन यदि समान विचारधारा वाले ये लोग अच्छे नहीं हैं तो उनकी मित्रता से समाज में अव्यवस्था अथवा अराजकता ही फैलेगी।

मेरे अंदर कुछ कमियाँ हैं, कुछ दुर्बलताएँ हैं और सामने वाले किसी अन्य व्यक्ति में भी ठीक उसी तरह की कमियाँ और दुर्बलताएँ हैं तो दोस्ती होते देर नहीं लगती। ऐसे लोग एक दूसरे की कमियों और दुर्बलताओं को जस्टीफाई कर मित्रता का बंधन सुदृढ़ करते रहते हैं। व्याभिचारी व चरित्रहीन लोगों की दोस्ती का ही परिणाम है जो आज देश में सामूहिक बलात्कार जैसी घटनाएँ इस कदर बढ़ रही हैं। इन घटनाओं को अंजाम देने वाले दरिंदे आपस में गहरे दोस्त ही तो होते हैं।

किसी भी कार्यालय, संगठन अथवा संस्थान में गुटबंदी का आधार प्रायः दोस्ती ही तो होता है न कि कोई सिद्धांत जो उस संगठन अथवा संस्थान को बर्बाद करके रख देता है। सत्ता का सुख भोगने के लिए कट्टर दृष्टि तक हाथ मिला लेते हैं और मिलकर भोलीभाली निरीह जनता का खून चूसते रहते हैं। हर गुलत-सही काम में एक दूसरे का साथ देते हैं, समर्थन और सहायता करते हैं। क्या दोस्ती है! इसी दोस्ती की बदौलत देश को खोखला कर डालते हैं।

एक प्रश्न उठता है कि सिर्फ दोस्त की ही मदद क्यों? हर जरूरतमंद की मदद की जानी चाहिए और इस प्रकार से जिन संबंधों का विकास होगा वही उत्तम प्रकार की अथवा उत्कृष्ट मित्रता होगी। एक बात और और वो ये कि जब हम किसी से मित्रता करते हैं तो उस मित्र के विरोधियों को अपना विरोधी और उसके शत्रुओं को अपना शत्रु मान बैठते हैं और बिना पर्याप्त वजह के भी मित्र के पक्ष में होकर उनसे उलझते रहते हैं चाहे वे कितने भी अच्छे क्यों न हों। ये तो कोई मित्रता का सही निर्वाह नहीं हुआ। मित्र ही नहीं विरोधी की भी सही बात

का समर्थन और शत्रु ही नहीं मित्र की गुलत बात का विरोध होना चाहिए। उर्दू के प्रसिद्ध शायर 'आतिश' कहते हैं :

मंजिले-हस्ती में दुश्मन को भी अपना दोस्त कर,
रात हो जाए तो दिखलावे तुझे दुश्मन चिराग।

और यह तभी संभव है जब हमारा विरोधी, प्रतिद्वंद्वी अथवा शत्रु भी कोई सही बात कहे या करे तो उसकी हमारे मन से स्वीकृति हो। ऐसा करके हम शत्रुता को ही हमेशा के लिए अलविदा करके नई दोस्ती का निर्माण कर सकते हैं। जहाँ तक मित्र की मदद करने की बात है अवश्य कीजिए। दोस्त के लिए जान कुर्बान कर दीजिए लेकिन तभी जब दोस्त सत्य के मार्ग पर अडिग हो, गुलत बात से समझौता करने को तैयार न हो और उसका जीवन संकट में पड़ गया हो।

लेकिन यदि दोस्त कुमार्गगामी है, उसका मार्ग अनुशासन, नैतिकता और धर्म के विरुद्ध है जो समाज, राष्ट्र और मनुष्यता के लिए घातक है तो ऐसी अवस्था में मित्र को समझा-बुझाकर सही मार्ग पर लाना ही सच्ची मित्रता है न कि उसके गुलत कार्य में बाधा उपस्थित होने पर उसकी मदद करना। कुमार्गगामी मित्र को मित्र मानना और उसकी सहायता करना बेमानी ही नहीं सामाजिक और राष्ट्रीय अपराध भी है। और सबसे महत्वपूर्ण तो ये है कि हमारे गुलत होने पर भी जो हमारा पक्ष ले, हमारी मदद करे वह हमारा मित्र नहीं, घोर शत्रु है।

106-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

**Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble
Pursuit of spreading 'Moral Values'**

New Year resolution

A story is told of a wise woman who in the middle of her lecture cracked a joke which received loud guffaws from the listeners. Continuing with her lecture she stopped brusquely to repeat the same joke. This time the response was a rather half-hearted laughter. Moments later, when she chose to repeat the same joke one more time, the audience turned cold with indignation. The wise woman smiled and said, "If you can't laugh at the same joke again and again, then why do you keep crying over the same thing over and over again? Forget the past, embrace the present and live the adventure of life here and now!" Philosophers suggest a simple strategy to embrace optimism. They exhort wiping out disappointments, failures and bitterness off the past permanently from our memories.

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Panjabi

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Forever indebted to merciful God

Vandana Arora

When asked if my cup is half full or half empty, I say I am thankful to have a cup. Each day, each moment is worth thanksgiving. During a recent discussion with my son who is on the verge of entering teenage years, I made him realize how fortunate he is. Like any other adolescent, he craved for gadgets and goodies that some of his friends flaunt and which I find frivolous. I made him enlist the things that he owns but his friends don't. Preaching imparts lessons to the preacher too. Along with my son, I too basked in the dawn of realization that God has been immensely kind to me. I sent my grudges to a sabbatical as I wanted to drench myself in the showers of His overwhelming benevolence. John Milton appropriately quotes in Paradise Lost, "The mind is its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven." Being thankful for what we have saves us the disgrace of hell. We duck ourselves into the unfathomable oceans of misery by resorting to grumbling and cribbing over little pretexts; whereas, we have the ability to rejoice in the bliss by admiring and cherishing whatever we have.

Last week's dusk witnessed me returning from a doctor's clinic for my daughter's check-up. At one of the traffic signals, I saw a middle-aged woman pushing herself into an alarmingly overcrowded bus. The swelling darkness left that woman with no choice but to embark on the bus stuffed with men. I could read her helplessness and hesitation and then compulsory decision to enter a vehicle where she was vulnerable enough but this compromise would make her reach home (or house)

in time. I feel grateful for a dignified vehicle that I use. It alarms me to see people sleeping on footpaths

enduring and sometimes surrendering to the biting chill of winters in Delhi.

I feel thankful to the almighty for a graceful shelter. It stupefies me to see people begging for food. I feel grateful for the three course meal as well as choicest delicacies. It's spine-chilling to see people partially clad in winters. I thank God for a variety of seasonal attires. It's shocking to see people with disabilities. I feel humbled to be able. Compassion flows out when inequality disintegrates society into fragments. While writing this I arrive into a garden of awareness. I am able to contemplate on a plethora of things that urge me to express gratitude.

The purpose of our life is met if along with appreciating our blessings, we share the same with our fellow human beings. The highest appreciation is not to utter words but to live by them. I think we need not wait for some thanksgiving occasion rather we must be thankful for each breath we take. Each new dawn heralds hope for us. We must cultivate the habit of being grateful which will immerse us into the richness of our blessings. I wish to sum up with a few words of gratitude that I learnt in my school: "Thank you God for the world so sweet/Thank you for the food we eat/Thank you for the birds that sing/Thank you God for everything."

मुकेश अम्बानी द्वारा एक सराहनीय कदम

भारत वर्ष के सब से बड़े उद्योगिक घराने रिलायन्स इंडस्ट्रीज के चेयरमैन श्री मुकेश अम्बानी ने घोषणा की है कि उनका समूह, जिस में कि रिलायंस डिलाईट स्टोर्ज भी आते हैं, किसी भी तरह के मांसाहारी भोजन या फिर जिस में पशुओं की हत्या हो, से सम्बन्धित कोई भी पदार्थ का व्यापार नहीं करेंगे। यहां यह समझना जरूरी है कि 100 के करीब रिलायंस डिलाईट स्टोर्ज अभी तक मांसाहारी व्यंजन बेचते थे और उन से समूह को काफी लाभ था।



योग को समझें, केवल कुछ आसन करने से व्यक्ति योगी नहीं बन जाता

भारतेन्दु सूद

यह एक बहुत गलत धारणा है कि हमारे आज के योग गुरुओं द्वारा सिखाये कुछ 'आसन' करने से हम योगी बन जाते हैं। और यह उससे भी गलत धारणा है कि जो हमें ऐसे आसन करने की शिक्षा देते हैं वह स्वयं योगी हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह व्यायाम जो कि हमारे शरीर को हृष्ट पुष्ट व सुन्दर बनाते हैं, ऋषि पातंजली द्वारा बताए अष्टांग योग की एक सीढ़ी है पर जब तक व्यक्ति बाकी सात सीढ़ियों से उसी शृंखला में नहीं करता यह योग का हिस्सा नहीं है व इसे योग कहना गलत व आम व्यक्ति को गुमराह करना है। ये आसन शरीर को सुन्दर, हृष्ट पुष्ट व सुन्दर तो बना सकते हैं परन्तु यह सोचना कि यह आपको बेहतर मनुष्य बना सकते हैं, एक मूर्खता है जब कि अष्टांग योग करने से मनुष्य, मनुष्य से उपर उठ कर देवता बन सकता है।



योगा नहीं, केवल व्यायाम

अच्छा होगा हम योग के ठीक रूप को समझें। योग नाम है उस किया का जिससे हम अपने को परमात्मा से जोड़ते हैं। शरीर को प्रकृति से जोड़ने का नाम भोग व परमात्मा से जोड़ने का नाम योग है। यह चित को उसकी वृत्तियों से अलग करना है। जब आप अपने चित को मन की वृत्तियों से अलग कर लेंगे तो अपने स्वरूप में स्थिर हो जायेंगे यही योग है।

शरीर को हृष्ट पुष्ट व सुन्दर बनाने के लिये हैं अपितु शरीरिक, अध्यात्मिक व मानसिक उत्थान द्वारा अपने को परमात्मा से जोड़ने की किया है जिसे हम समाधी कहते हैं।

महर्षि पतंजली द्वारा बताए अष्टांग योग की आठ सीढ़ियां हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधी। पांच यम हैं—सत्य, आहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इसी तरह पांच नियम हैं—शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय व ईश्वर समर्पण

महर्षि पतंजली ने जब यह अष्टांग योग की आठ सीढ़ियों का क्रम बनाया तो उन्होंने यह उमीद की थी कि व्यक्ति उसी क्रम में चलता हुआ समाधी तक पहुंचेगा यानी की यम और नियम के बाद ही आसन की किया को शुरू करेगा। जिसका सीधा अर्थ यह है कि अगर आप यम और नियम को धारण किये बिना आसन की किया को शुरू करते हैं तो आसन योग न होकर एक व्यायाम होगा। यह अष्टांग योग की आठ सीढ़ियां न केवल

प्राणायाम सांस पर नियंत्रण की किया है। प्राणायाम द्वारा चित, उसकी वृत्तियों से अलग होता जाता है। जब आप अपने चित को मन की वृत्तियों से अलग कर लेंगे तो अपने स्वरूप में स्थिर हो जायेंगे व ध्यान कर सकते हैं, यह प्रत्याहार द्वारा प्राप्त किया जाता है। धारणा उस अवस्था को कहा है जब व्यक्ति एक ही बिन्दु पर काफी समय तक अपने मन को टिका सके, अर्थात् मन में जो हर समय विचार आते रहते हैं उन से मन स्वतन्त्र हो जाए। यह बिन्दु है ईश्वर का मुख्य नाम ओम् । ध्यान उस अवस्था का नाम है जब मन निर्विषय हो कर एक ही स्थान पर केन्द्रित हो जाये। पांच विषय जिनसे व्यक्ति को निर्विषय होना है, वे हैं — आंख से देखना, कान से सुनना, नाक से सूंघना, जिह्वा से चखना व त्वचा से छूना। सांख्यदर्शन का ऋषि कहता है, इन पांच अवस्थाओं से जब मन अलग होकर केवल सच्चिदानन्द, परिपूर्ण, घट-घटवासी, सर्वान्तरयामी

परमात्मा के ध्यान में मग्न हो, उसी अवस्था का नाम ध्यान है। प्राणायाम, प्रत्याहार और ध्यान का उद्देश्य मन को केन्द्रित करना है और जब व्यक्ति काफी समय तक इस ध्यान की स्थिती में रहे उसे समाधि का नाम दिया गया है। यह एक ऐसी स्थिती है जब योगी अपने आप को ईश्वर के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ महसूस करता है और अपने आप को ऐसे आनन्द में पाता है जिसका वर्णन करना आसान नहीं केवल सच्चा योगी ही उसके आरे में जानता है। इस तरह योग का उद्देश्य समाधि तक पहुँचना है पर यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति महर्षि पतंजली द्वारा बताए अष्टांग योग की आठ सीढ़ियाँ—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रतिहार, धारना, ध्यान व समाधि का क्रम से पालन करे।

इनमें जो पहले पाँच अंग—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार हैं वह योगी के लिये बुनियाद का काम करते हैं इनका सीधा सम्बन्ध शरीर व मस्तिष्क से होता है। आखरी तीन स्थितीयाँ—धारना, ध्यान व समाधि तब तक सम्भव नहीं हैं जब तक कि पहली पाँच द्वारा मन को स्थिर न कर लिया जाए। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि समाधि या अध्यात्मिक रूप से प्रकाशवान होने के लिये व्यक्ति को आठों सीढ़ियों से गुजरना आवश्यक है जब कि शरीर को सुन्दर व हृष्ट पुष्ट बनाने के लिये आसन ही काफी हैं परन्तु ऐसा व्यक्ति अपने आप को अगर योगी कहे तो वह दूसरों को गुमराह करना है।

योगी मन के अभ्यास से ही सुख और दुख को एक ही तरह महसूस करने के योग्य बनता है। न तो वह सफलता और सुख की घड़ियों में खुशी से पागल हो जाता है और न ही दुख व असफलता उसे तोड़ देती है। उसके मन में न तो किसी प्रकार का भय रहता है न ही

उसमें मन में किसी के प्रति घृणा का भाव होता है। वह संसार को सहज स्वभाव से देखता है।

भागवत गीता में भी योगी उसे कहा है जिस का मन हर स्थिती में स्थिर है। जो कि सुख और दुख को एक ही तरह महसूस करता है। न तो अपेक्षाएँ हैं, न इच्छाएँ और न ही रोष। उसकी आत्मा ने परमात्मा के साथ मिलन द्वारा ईश्वरीय गुण प्राप्त कर लिये होते हैं। भगवान् कृष्ण के अनुसार दुख व मन की बेचैनी का कारण है स्वार्थ से पैदा हुई इच्छाएँ। ऐसी इच्छाओं से दूर रहने का एक ही रास्ता है और वह है अपने को अनुशासन में रखना व ऐसे निष्काम सेवा के कार्य करना जिस से दूसरों का भला हो। यम और नियम भी इसी मन के अनुशासन की बात करते हैं।

यह स्पष्ट है कि आसन अष्टांग योग की सीढ़ी तो है पर यहां पहुँचने से पहले व्यक्ति को यम और नियम का अभ्यास करना होगा वरना यह महज व्ययाम है।

योग क्या है ?

बनवास के दौरान जब रावण सीता का हरण कर के ले गया और श्री राम लक्ष्मण के साथ खोज में भटक रहे थे तो वहाँ के व्यक्तियों ने कुछ आभूषण जो कि उन्हें मिले थे श्री राम को दिखाये। श्री राम ने लक्ष्मण को दिखाते हुये कहा—“लक्ष्मण देखो क्या यह आभूषण तुम्हारी भाभी के ही है।” लक्ष्मण श्री राम को कहते हैं—“मैंने तो भाभी के चेहरे को कभी देखा ही नहीं इसलिये गले के आभूषण नहीं पहचान पाऊंगा। क्योंकि मैं प्रातः प्रतिदिन उनके चरण स्पर्श किया करता था इसलिये पैरों के आभूषण ही पहचान पाऊंगा। ऐसा आत्म संयम ही योग है।

ईमानदारी से काम करने के लिये शिक्षण

इंग्लैंड की सरकार अपने चुने हुये लोगों के प्रतिनिधियों को ईमानदारी से काम करने के लिये शिक्षण देगी ताकी भ्रष्टाचार की घटनायें कम हो। इस शिक्षण की खास बात यह होगी कि उन्हें अच्छे बुरे, गलत ठीक का ज्ञान दिया जायेगा और यह बताया जायेगा कि किस प्रकार वह अपने आप को भ्रष्ट लोगों से बचा सकते हैं।

इसके विपरीत भारत सरकार ने लोकपाल विधेयक पास

किया है ताकी भ्रष्ट राजनेता व अफसरों के विरुद्ध कदम उठाये जा सकें। एक सरकार तो यह चाहती है कि उसके कानून को बनाने वाले व्यक्ति भ्रष्टाचार से दूर रहें दूसरी तरफ भारत की सरकार यह मान कर चल रही है कि भ्रष्टाचार में तो लिप्त रहेंगे ही पर उसके बाद उनको उस का खमयाजा भुगतना पड़े। दोनो देशों की अपनी-अपनी सोच है पर फर्क जरूर है।

Swami Dayanand's view on early childhood education (Part 2)

Dr Vasundhra Rehani,

The age five to eight is the second cycle of early childhood education according to Swami Dayanand. He had outlined his own indigenous scheme for the children of this age group. The same is quoted below in Swamiji's own words—

“When boys and girls are five year old, they should be taught the Devanagari characters and also those of foreign languages. Then they should be made to learn by heart with meanings the Veda Mantras, such verses or shlokas, aphorism, advice and morals and teach how to behave towards the Deity, mother, family, father, teacher, scholar, guest, king, subject, relative, sister, servant and others so that they may not be misled and duped by cheats”

In reference to the above stated context, Swami Dayanand's stand that when a child becomes five year old, he or she should be introduced to the study of a foreign language is perfectly valid and sounds correct because it is a medically approved fact that from the age of one on through the early childhood, the speech areas of the child are plastic and receptive and the early childhood is the best period of learning one or more languages. This further reveals the matured educational thoughts of Swamiji in 1874 and his farsightedness and vision in the field of early childhood education. Similarly the crammed Vedic Mantras and other verses of great moral strength and high values of life become a part of permanent mental block of children. When they grow up and attain mental growth and intellectual maturity, these Verses, committed to memory in early childhood, becomes a source of great intellectual light and delight and of moral stimulation in hours of great need in one's life.

Swami Dayanand recommends the age of five as proper one to acquaint the child with the preliminary ingredients of education under the aegis of their homes, parents as well as in the neighbourhood school. During this period the child should be prepared to become ready to receive the methodical education to be started three years hence. More stress should be laid at this stage on oral acquaintance of a child with the various aspects of culture and other social things without burdening him or her too much with the “written exactitude.” Thus the child should become repository of the best of his/her culture and other knowledge. Sending to the neighbourhood school will prepare the child to be ready to live apart from his parents and become dedicated solely to be educated methodically in the coming years.

Aum

THE LIGHT OF TRUTH

(English Translation of Swami Dayananda's Satyārtha Prakāśa)

SATYARTHA PRAKASHA IS
AN EXPOSITION OF
TRUTH, DHARMA AND
REVELATION IN THE
MODERN CONTEXT.

SVAMI DAYANANDA
REFERRED BACK TO THE
PERMANENT MESSAGE OF
THE VEDAS AND
EXHORTED THE
INDIANS TO RENEW
AND REBUILD THEIR
LIFE AND CULTURE IN NEW

FORMS WHICH WERE
RELEVANT IN THE NEW AGE.



The proper age for launching a child into the systematic educational career has been set up, by the Maharishi, at the commencement of ninth year. This is the time when Yajnapavita- Sanskara i.e. Sacred thread ceremony takes place and this is to be performed for the children of both the genders. After that the boys and girls are to be sent to separately located regular schools i.e. gurukuls the teachers home situated away from the tempting, burdensome and polluted city life. The sacred thread ceremony is performed to imbibe in them the sense of responsibility towards the new stage i.e. Brahmacharya or studenthood. The boys and girls should stay in Gurukul till the age of 25 and 16 respectively. There was to be no marriage till then. After going through the details of Dayanand's scheme of early childhood education it is evident that he is a staunch supporter of the role of parental education beside the role of scholastic education. And it is a fact also that what a child is going to be as an adult is largely determined in the childhood before he/she is five.

OM SHANTI, SHANTI, SHANTI.

Dr. Vasundhra Rehani is Associate Professor (Retd)
Dayanand Chair for Vedic studies, PU, Chandigarh.

ओ३म् महिमा

किसी अखबार में हमने पढ़ा कि ओम् का कोई अर्थ नहीं है फिर भी हम ओम् बोलते हैं। मैं उस अखबार की लेख की कटिंग नहीं रख सका। पहले तो हम यह कहना चाहते हैं कि जब ओम् का कोई मतलब ही नहीं है तो हम क्यों ओम् की रट लगाते हैं। प्रत्येक मंत्र को बोलने से पूर्व भी हम ओम् का उच्चारण करते हैं। अग्निहोत्र करते समय भी प्रत्येक मंत्र से पूर्व ओ३म् का उच्चारण करते हैं। फिर भी हम यह कहें कि इसका कोई मतलब नहीं है तो यह ठीक नहीं है। वैसे तो प्रत्येक अक्षर का कोई न कोई अर्थ अवश्य होता है। संस्कृत और हिंदी वैज्ञानिक भाषाएँ हैं कौन से वर्ण अथवा स्वर को कैसे उच्चारित करना चाहिए इसका भी निश्चित प्रकार बताया गया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महाराज सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में लिखते हैं।

ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योंकि इसमें जो अ, उ, म् तीन अक्षर मिलकर एक ओम् समुदाय हुआ है, इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे— अकार से विराट्, अग्नि और विष्वादि, अर्थात् जो बहु प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे इससे 'विराट्' नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है, जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इनमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है, इसलिये उस परमेश्वर का नाम 'विश्व' है। इत्यादि नामों का ग्रहण अकार मात्रा से होता है।

माडूक्य 9 में लिखा है जागरित स्थाना वैष्णानरोकार प्रथमा मात्रा अर्थात् ओम् की प्रथमा मात्रा 'अकार अ' है। उसका सम्बन्ध जागरित स्थान से है, और वह वैष्णानरत्रिविष्णानरत्रिविष्ण सम्बन्धी है। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि अर्थात् जिसमें सूर्यादि

तेजवाले लोक उत्पन्न होके जिसके आधार रहते हैं अथवा जो सूर्यादि तेजःस्वरूप पदार्थों का गर्भ नाम उत्पत्ति और निवास स्थान है, इससे उस परमेश्वर का नाम "हिरण्यगर्भ" है, जो चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता और सब बलवानों से बलवान है, इससे उस ईश्वर का नाम "वायु" है, जो आप स्वयंप्रकाश और

सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है इससे उस ईश्वर का नाम "तैजस" है। माडूक्य 10 में लिखा है स्वप्नस्थानस्तैजस उकारो द्वितीया मात्रा। अर्थात् ओम् की द्वितीया मात्रा 'उकार उ' है। उसका सम्बन्ध स्वप्नस्थान से है, वह तैजस है। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि अर्थात् जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है इससे उस परमात्मा का नाम "ईश्वर" है, जिसका विनाश कभी न हो, उसी ईश्वर की "आदित्य" संज्ञा है, जो

निर्भान्त ज्ञानयुक्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है, इससे उस ईश्वर का नाम "प्राज्ञ" है। माडूक्य 11 में लिखा है सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकारस्तृतीया मात्रा अर्थात् ओम् की तृतीया मात्रा 'मकार म' है। उसका सम्बन्ध सुषुप्तस्थान से है, वह प्राज्ञ है। ईश्वर उक्त नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्यशास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है कि प्रकरणानुकूल ये सब नाम परमेश्वर के हैं। अवति इति ओम् जो उत्पादक, पालक और संहारक है उसका नाम ओ३म् है।

इसलिये मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर ही की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें, उससे भिन्न की कभी न करें। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव नामक पूर्वज महाशय विद्वान् दैत्य दानवादि निकृष्ट मनुष्य और अन्य साधारण मनुष्यों ने भी परमेश्वर ही में विश्वास करके उसी की स्तुति

प्रार्थना और उपासना की, उससे भिन्न की नहीं की। वैसे हम सबको करना योग्य है।

इस संसार की रचना करने वाली, धारण करनेवाली और प्रलय करने वाली जो परम शक्ति है, उसे 'परमेश्वर' कहा जाता है। वेदादि शास्त्रों में प्रकरणानुसार उसे ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, भगवान्, ओम् आदि अनेक नामों से पुकारा गया है, किन्तु सब नामों में सर्वोत्तम और मुख्य नाम ओम् है। अन्य सभी नाम इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। 'अवति इति ओम्' इस व्युत्पत्ति के अनुसार सभी प्राणियों का रक्षक होने के कारण परमात्मा का नाम ओम् है। इस सर्वोत्तम नाम 'ओम्' से परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए। उपनिषदों में 'ओम्' नाम की महिमा का अनेक स्थानों पर उल्लेख हुआ है—

तैम्योमितप्लेम्य ओंकारः संप्रास्त्रवत्— छांदोग्य उप० 2. 13.3 अर्थात् उन प्रकाशित वेदों से ओम् यह पद प्रकट हुआ है।

ओमिति ब्रह्म। ओम् इतीदं सर्वम् — तैत्तिरीय उप० — अर्थात् ओम् यह ब्रह्म का नाम है। ओम् ही सब कुछ है अर्थात् यह समग्र जगत् उसी में समाया हुआ है, वही उसका कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता है।

ओमित्येतदक्षरमुदगीथमुपासीत — छांदोग्य उप० 1.4.1 अर्थात् ओम् नाम वाला अविनाशी परमात्मा जो गुणगान करने योग्य है, उसकी ओम् नाम द्वारा उपासना करे।

विज्ञान पत्रिका साइंस सन् 2007 में एक शोध प्रकाशित हुआ था जिसमें कहा गया है कि ओ३म् एक ऐसा शब्द है जिसका अलग-अलग आवृत्तियों से रक्तचाप,

दिल-दिमाग, पेट और खून से जुड़ी हुई कई बीमारियों के इलाज में चमत्कारिक असर दिखा सकता है। यहाँ तक कि सेरीब्रल पैल्सी-जैसी असाध्य बीमारी में भी ओ३म् के उच्चारण से उपचार की संभावना बढ़ सकती है। दिल और दिमाग के रोगियों पर किये गये परीक्षण के विषय में उक्त पत्रिका में उल्लेख है कि रिसर्च एण्ड एक्सपेरिमेन्ट इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरो साइंसेज के एक दल ने उक्त रोगों के विषय में शोध किया है। दल के प्रमुख प्रोफेसर जे. मॉर्गन के अनुसार उनके दल ने सात साल तक दिल और दिमाग के रोगियों पर परीक्षण किया और परीक्षण में देखा गया कि ओ३म् का अलग-अलग आवृत्तियों में और ध्वनियों में नियमित रूप से किया गया जाप काफी असरकारी है। परीक्षण के लिए 2500 पुरुषों और 200 महिलाओं को चुना गया जिसमें से कुछ लोग बीमारी के अन्तिम चरण में पहुँच चुके थे। जीवन रक्षक दवाईयों के अलावा अन्य दवाईयों बन्द कर दी गई। परिणाम यह हुआ कि तीन महीने में 70 फीसदी पुरुष और 85 फीसदी महिलाओं को नब्बे फीसदी राहत मिली।

इसमें ध्यान देने योग्य यह है कि आहार विहार का ध्यान अवश्य रखना होगा। युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्व योगो भवति दुःख हा।। गीता।।

इस प्रकार परमपिता परमात्मा का निज नाम ओ३म् है। यह शब्द सार्थक ही नहीं अपितु इसी की ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी योग्य है अन्य की कदापि नहीं।

अम्बाराम सिद्धान्त शास्त्री, वेद सदन, हिम्मतपुर मल्ला, हरिपुरनाथक, हल्द्वानी नैनीताल उत्तराखण्ड

The Daughter

"The Best Lines ever said by a Man....."

When I was born, A Woman was there to hold me.....

My Mother

As I grew up as a child, A woman was there to care & play with me.....

My Sister

I went to school, A Woman was there to Help me Learn.....



My Teacher

I needed Compatability, Company & Love, A Woman was there for me..

My Wife

I became tough, A Woman was there to melt me.....

My Daughter

When I will die, A Woman will be there to absorb me in.....

Motherland

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
 शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
 आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महर्षि दयानन्द बालआश्रम की स्थापना फरवरी 2013 में चण्डीगढ़ के साथ लगे शहर मोहाली में की गई थी। प्रभु की असीम कृपा व आप सब के सहयोग से आज इस में 10 बच्चे व दो बार्डन हैं। इसका निरन्तर विकास हमारा उद्देश्य है।



महिन्द्रा स्कूटरज कम्पनी के मोहाली में नये मोटर साईकल के उदघाटन के समय महर्षि दयानन्द बालआश्रम के बच्चों को आमन्त्रित किया गया

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

योगिंदर पाल कौड़ा,

नरेन्द्र गुप्ता

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

लेखराम (+91 7589219746)



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निर्माण के 60 वर्ष



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहाँ उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Mumbai-23095120,, 9892904519, 25412033, 25334055, Banglore-22875216, Hyderabad-24651472, 24751760, Kolkata-9339344231, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwallyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajlabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Indore-982633800, Gurgaon-2332988, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790, Yamunanagar-232063, Kanpur-2398775, Nainital-235489, Mukerian-245113, Ujjain-2562140, Porbander-9825275198, Ajmer-2431084, Kota 7597306851, Jhansi-244163, Saharanpur-09412131021

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



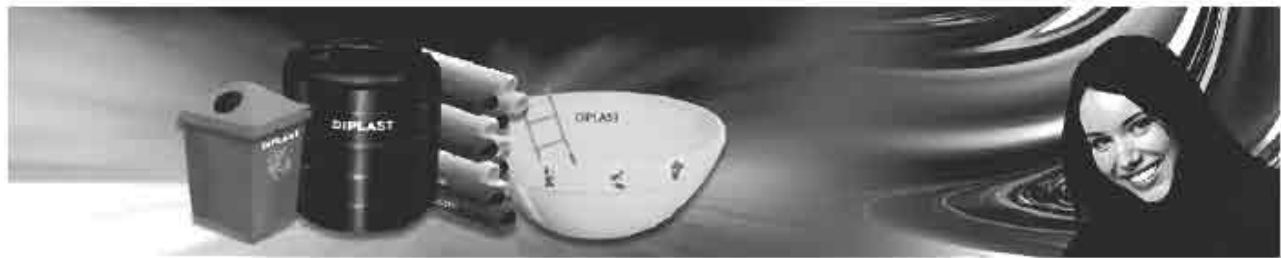
स्वर्गीय राजेन्द्र रानी वर्मा



सत्य पाल और मीना पवार



भाग चन्द वर्मा



मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

**40 years
in service**



DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870

REMEMBRANCE

Our tributes to our father who while meeting parental obligations had the capacity to give time for the social causes and had an expanded vision of family. Perhaps that's why he lived a better life.



Kaviraj Dr. B.N. Gupta (Sood)
1923-1999